शाश्वत यौगिक खेती से बढ़ायें उपज और आमदनी

रासायनिक खेती के दुष्परिणामों को जानने के बाद मैं यौगिक खेती की ओर बढ़ा। पहले जो ज़मीन रासायनिक खाद के इस्तेमाल से बंजर सी होने लगी थी, आज वही ज़मीन सिर्फ जैविक खाद और योग के प्रयोग द्वारा फलदायिनी बन चुकी है। और न सिर्फ अच्छी उपज बल्कि अच्छी आय भी प्रदान कर रही है। आइये, हम जानते हैं कि इस विषमुक्त शाश्वत खेती की विधि क्या है...

मेरा नाम ब्र.कु. भगवान इंगोले है। मैं नांदेड़ जिले के मालेगांव का निवासी हूँ। वहाँ की दस हज़ार जनसंख्या है। मैं बीस साल से खेती कर रहा हूँ और पिछले पच्चीस साल से राजयोग का अभ्यास कर रहा हूँ। हमारे पास खेती करने के लिए 12 एकड़ ज़मीन है। हम सभी किसानों का यही लक्ष्य रहता है कि हमें ज़्यादा उपज मिले और ज़्यादा दाम मिले ताकि हमारा जीवन अच्छे से चले। शुरू में हमने भी अपनी ज़मीन में उत्पादन बढ़ाने के लिए बहुत रासायनिक खाद, केमिकल डाले। माल का उत्पादन तो बढ़ गया, खर्चा भी बढ़ गया, लागत भी बढ़ गई, लेकिन आमदनी नहीं बढ़ी। ज़्यादा उत्पादन होने से ग्राहक नहीं मिले तो मूल्य में गिरावट आ गई। ये देखते हुए हमने खेती में और रासायनिक खाद डाला, दो बोरा डाला, तीन बोरा, चार बोरा डाला, और डालते-डालते हमारी पूरी ज़मीन बंजर सी बन गई। हालात ये हो गये थे कि उसमें कुछ भी उगता नहीं था।

धरती की उर्वरता का शत्रु रासायनिक खाद

अब हम जानते हैं कि हमारे देश में इस खाद का इस्तेमाल कब होना शुरु हुआ। हमारे देश में 50 साल पूर्व जो खेती होती थी उसमें कोई रासायनिक खाद नहीं डाली जाती थी लेकिन फिर भी हमारी ज़मीन बहुत उपजाऊ होती थी। उसमें सेन्द्रिय कर्ब (उर्वरता) बहुत था। ये धरती सोना उगलती थी। लेकिन भारत के स्वतंत्र होने से पहले जब पहला और दूसरा महायुद्ध हुआ, उस समय यूरोपीय देशों जैसे जर्मनी, इटली, फ्रांस, लंडन आदि की अर्थव्यवस्था बारूद, गोला बनाने पर ही आधारित थी। अगर वे इनका उत्पादन बंद कर देते तो उनकी अर्थव्यवस्था पूरी तरह से ठप्प हो जाती। युद्ध पूरा होने के बाद उन्हें लगा कि अब ये सब चलेगा कैसे? इनका हम कहाँ इस्तेमाल कर सकते हैं? तो उन्होंने एक कमेटी बनाई वैज्ञानिकों की। उस कमेटी में वैज्ञानिकों से पूछा गया कि हम इसका इस्तेमाल कहाँ कर सकते हैं? क्या इसका प्रयोग खेती में भी किया जा सकता है? तो वैज्ञानिकों ने जाँच करके बताया कि अगर हम इसको खेती में डालेंगे तो कुछ दिनों के लिए तो उत्पादन बढ़ेगा लेकिन बाद में ज़मीन बंजर बन जायेगी। और ये सेहत के लिए हानिकारक भी है। जिससे अनेक प्रकार के रोग जैसे कैंसर, टी.बी. आदि बढ़ेंगे। तो उन्होंने ये रिपोर्ट दी कि आप इसका खेती में इस्तेमाल नहीं करो।

स्वार्थता ने धरती माँ को बनाया विषैला

कमेटी के मना करने के बाद सत्ताधारियों ने कहा कि आपका काम है बस रिपोर्ट देना, बाकी हम क्या करेंगे, क्या नहीं करेंगे ये हम सोचेंगे। लंडन, यूरोप के जो गुलाम देश थे वहाँ का जितना भी गोला-बारुद में लगने वाला जो कच्चा माल था फास्फोरस, नाइट्रोजन आदि वो हमारे भारत में खाद के रूप में भेज दिया गया और उसकी आदत लगाने के लिए यहां के गांवों में भोले-भाले किसानों को मुफ्त में बंटवा दिया गया। फिर किसानों को उसकी आदत हो गई। इससे हमारी ज़मीन जो बहुत ही उपजाऊ थी, उसने थोड़े दिन तो अच्छी उपज दी, लेकिन धीरे-धीरे उत्पादक क्षमता कम होते-होते वो बंजर सी बन गई। परिणामस्वरूप किसान साहूकारों का, बैंक का कर्ज़दार बन गया और फिर किसान आत्म हत्या करने लगे। आज हालत बहुत खराब है क्योंकि ज़मीन के अन्दर जो सेन्द्रिय कर्ब होता है वो बहुत कम हो गया है। इसी वजह से हम जो कुछ भी उगाते हैं चाहे कोई सब्जी हो या फल, कुछ भी लगता ही नहीं है।

सॉलिड वेस्ट से बढ़ाई उर्वरता

अभी मैं आपको अपने अनुभव से बताना चाहता हूँ कि कैसे हम अपनी ज़मीन को उपजाऊ बना सकते हैं जो मैंने ब्रह्माकुमारीज़ ग्राम विकास प्रभाग के द्वारा आयोजित शाश्वत यौगिक खेती शिविर में जाना और समझा है। शिविर में मुझे रासायनिक खेती के दुष्परिणामों के बारे में जानकर आश्चर्य हुआ। इसके पहले भी मैं रासायनिक खेती के दुष्परिणामों को जानता तो था परन्तु यहाँ आने से इसके बारे में पूरी समझ मिली। उसमें हमें ये बताया गया कि ज़मीन की पौष्टिकता और उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए कम समय में सड़ने वाले जो भी पदार्थ हैं उन्हें ज़मीन में मिला दें या ऊपर आच्छादित कर, बाद में हल चलाकर ज़मीन में मिला दें। जैसे कम्पोस्ट खाद, केंचुए की खाद, हरी खाद, सेंद्रिय खाद इत्यादि का इस्तेमाल कर सकते हैं। और कोई भी कचरा और फसल के जो अवशेष हैं उसको कभी भी जलाना नहीं चाहिए। उनको ज़मीन में गाड़ देना चाहिए क्योंकि जीवाणुओं का, बैक्टीरिया का अन्न ही यही है, जिससे उनकी संख्या बढ़ती है। फिर जब बारिश आती है तो केंचुए ऊपर आते हैं फिर अन्दर जाते हैं, उसकी वजह से वो बारिश का पानी बहकर चला नहीं जाता बल्कि ज़मीन के अन्दर चला जाता है।

जियो और जीने दो के विचार ने लाया समूल परिवर्तन

अगर हम इस विधि का खेती में इस्तेमाल करें तो सरकार जो डैम बनाकर हज़ारों कोटि खर्चा करती है उसकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी। वो खर्चा बच जायेगा। और इसके साथ-साथ हमें कुछ पेड़-पौधों जैसे नीम, सिंघी, अरंडी, सीता फल आदि को भी लगाने चाहिए जो हमारे फसल का सरंक्षण करते हैं। शाश्वत यौगिक खेती में हमारा पहला लक्ष्य यही है कि जियो और जीने दो। अभी उसी के आधार पर हम शाश्वत यौगिक खेती करते हैं।

शाश्वत यौगिक खेती की विधि, इससे आय में होने वाली वृद्धि और सरकार से मिलने वाले सहयोग के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें ओमशान्ति मीडिया का अगला अंक...

ओम शांति ऑर्गेनिक फार्मर - मालेगांव
कृषि तंत्रज्ञान व्यवस्थापन यंत्रणा (आत्मा), नांदेड़
FARM REG. NO. - AR/ATMA /OF 20H/2019
संगठन - सेंद्रिय खेती, मो. - 9421295984 , 7387291054

- शेष अगले अंक में

मंडी-हि.प्र.। तम्बाकू निषेध दिवस पर आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् एस.डी.एम. सन्नी शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दीपा। साथ हैं ब्र.कु. टीना तथा ब्र.कु. निलती।

जयपुर-राजापार्क। 'आध्यात्मिकता के माध्यम से सफल व्यापार' कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए जय सिंह सेठिया,एम.सी.ए. डायरेक्टर,नाश फैशन इंडिया लिमिटेड, शकुंतला सिंह,मैनेजिंग डायरेक्टर,राजस्थान स्मॉल इंडस्ट्रीज़ कॉर्पोरेशन, सब ज़ोन इंचार्ज ब्र.कु. पूनम, डॉ. कृष्णा कांत पाठक,कमिश्नर,इंडस्ट्रीज़ एंड सेक्रेटरी सी.एस.आर., सुरेश पटोदिया,चेयरमैन,सी.ए.आई.टी.,राजस्थान चैप्टर,कॉन्फेडरेशन आल इंडिया ट्रेडर्स तथा अन्य।

मुकेरियन-पंजाब। तम्बाकू निषेध दिवस पर रेलवे स्टेशन पर लगाई गई नशा मुक्ति प्रदर्शनी एवं शिविर का शुभारम्भ करते हुए स्टेशन मास्टर कुलदीप कुमार। साथ हैं ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. जसकिरत तथा अन्य।

गया-सिविल लाइन(बिहार)। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्टेशन मास्टर अजय कुमार, स्टेशन मास्टर विरेन्द्र कुमार तथा ब्र.कु. शीला।

सदाबाद-उ.प्र.। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित 'मेरा भारत नशा मुक्त भारत' कार्यक्रम में उपस्थित हैं सब इंस्पेक्टर सुशील शर्मा, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. किशोर, ब्र.कु. बबीता, ब्र.कु. राधा, ब्र.कु. मिथेलश, ब्र.कु. गुंजन तथा अन्य।

तोशाम-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय तम्बाकू निषेध दिवस पर बच्चों को व्यसन के प्रति जागरुक करते हुए चिकित्सा अधिकारी डॉ. जितेन्द्र,सी.एच.सी. तोशाम।